Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.3982, Volume 08, No. 01, January, 2018, pp. 579-585

कोचिंग का माध्यमिक स्तर की सार्वजनिक परीक्षाओं में विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. चन्द्र प्रकाश पालीवाल*

आज के विद्यार्थी कल के नागरिक हैं। विद्यार्थी की प्रकृति का निर्धारण उसकी शिक्षा द्वारा ही होता है। शिक्षण–प्रक्रिया का मुख्य सूत्राधार अध्यापक है , क्योंकि अध्यापक छात्रों को मार्गदर्शन ही नहीं देता बल्कि विद्यार्थियों के पूर्ण विकास व उसके व्यक्तित्व के निर्माण में उसका सर्वाधिक योगदान रहता है। शिक्षक का नयी पीढ़ी को समाज में सम्भावित परिवर्तन, उनकी आवश्यकताएं, इच्छाओं और सामाजिक परिवर्तन में नागरिकों की क्या भूमिका है, इसका विश्लेषण कर इस दिशा में मार्गदर्शन की क्षमता रखता है।

आदिकाल से मानव व समस्त प्राणी प्रकृति के सहचर रहे हैं। मानव अपने मूल स्वभाव से प्रेमी है। वैदिक काल में प्राकृतिक पर्यावरण की गोद में वैदिक दर्शन, संस्कृति तथा विज्ञान का विकास हुआ था। उस काल में शिक्षा एवं शोध के केन्द्र ऋषियों के आश्रम होते थे। ये आश्रम नगरों से दूर शान्त व एकांकी वातावरण में स्थित होते थे। जहां पक्षियों का कलरव व नदियों की कलकल की स्वच्छन्द ध्वनि सुनाई देती थी, जो एक ओर वहां रहने वालों को मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ रखती थी। आश्रम के चारों ओर हरे–भरे फल–फूलों से आच्छादित वृक्ष होते थे, जो आश्रम के आस–पास के वातावरण को सुन्दर व मोहक बनाते थे।

प्राचीन काल में शिक्षक का स्वरूप वर्तमान में बहुत अलग था। उस समय अध्यापक का समाज में बहुत उच्च स्थान था। समाज उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखता था। उस समय अध्यापक चरित्रवान, आदर्शवान तथा ऊँचे विचारों वाले थे। उनके मार्गदर्शन में रहकर विद्यार्थी अपने जीवन का निर्माण करते थे। विद्यार्थियों के प्रति शिक्षक के ह्रदय में गहरी प्रतिबद्धता थी। वे अपना सम्पूर्ण जीवन ज्ञानार्जन के लिए अर्पित कर देते थे। विद्यार्थी के आचरण पर गुरू का गहरा प्रभाव था। अध्यापक सच्चा मार्गदर्शक था। वे भौतिक सुखों व धन के पीछे नहीं दौड़ते थे। इसलिए समाज में उन्हें सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। इस कारण भारत ज्ञान के शिखर पर आसीन था और सम्पूर्ण विश्व को ज्ञान का प्रकाश देता था।

आज विद्यालय तो अध्यापकों के समय बिताने का साधन व 'कोचिंग कक्षाओं' में विद्यार्थी जुटाने का साधन बन गए हैं। जिनमें कुछ विद्यार्थी इन कक्षाओं में विशेष तैयारी के लिए शिक्षण प्राप्त करते हैं व कुछ केवल कक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए 'कोचिंग कक्षाओं' का सहारा लेते हैं। कुछ विद्यार्थी प्रायोगिक परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए तो कुछ अध्यापकों के दबाव में 'कोचिंग कक्षाओं' में पढ़ने के लिए विवश होते हैं।

उपर्युक्त कारणों से यह अनुभव किया गया कि वर्तमान परिस्थितियों में 'कोचिंग कक्षाओं' का विद्यार्थियों की उपलब्धियों एवं समायोजन पर क्या प्रभाव पड़ता है? इसका अध्ययन किया जाना चाहिए। फलस्वरूप शोध के लिए इस विषय को चुना गया।

'कोचिंग कक्षाओं' से तात्पर्य ऐसी कक्षाओं से है जिसके अन्तर्गत विद्यार्थियों को शिक्षण संबंधी निर्देश दिए जाते हैं। कोचिंग का प्रयोग विद्यार्थियों को उपचारात्मक या सहायक निर्देशन के लिए उस समय प्रदान करने की आवश्यकता अनुभव की जाती है जब वह नियमित रूप से विद्यालयों में दिए गए निर्देशन कार्यक्रम में दिए गए निर्देशों को समझने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। कोचिंग की सहायता से विद्यार्थी स्वयं को कक्षा में अन्य छात्रों से पिछड़ा हुआ अनुभव नहीं करते तथा अध्ययन में आने वाली कठिनाइयों का निराकरण कोचिंग की सहायता से विद्यार्थी स्वयं को सुरक्षित महसूस करते हैं तथा वे अपनी क्षमताओं व उपलब्धियों के प्रति आश्वस्त हो जाते हैं। 'कोचिंग कक्षाओं' के निर्देशन से सहायता प्राप्त कर विद्यार्थी अपनी उपलब्धियों एवं समायोजन की पूर्ति में सफल हो जाते हैं।

* प्राचार्य, आर्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, मालवीय नगर, अलवर, राजस्थान।

विद्यालयों में छात्र संख्या वृद्धि, शिक्षक–छात्र अनुपात, भवन व फर्नीचर की अपर्याप्तता आदि के कारणों से विद्यालय में बालक अपने आपको समायोजित नहीं कर पाता जिससे वह अपनी पढ़ाई में वांछित उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाता है। इस प्रकार वह कोचिंग के माध्यम से अपने आपको समायोजित करने का प्रयास करता है।

समायोजन अनुकूलन, सामंजस्य एवं संतुलन इत्यादि के लिए प्रयुक्त एक व्यापक शब्द है। बालक अपने जीवन में जब–जब अच्छा समायोजन करने में सफल होता है, तब–तब वह सभी क्षेत्रों में सफलताएं अर्जित करता जाता है। लेकिन समायोजन के अभाव में बालक के जीवन की सफलताओं पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। अतः बालक के विकास एवं सफलताओं के लिए आवश्यक है कि उसका समायोजन अच्छा हो। समायोजन का सीधा संबंध व्यक्तित्व से है, अतः व्यक्तित्व में जब भी नकारात्मक प्रवृत्तियां विकसित होंगी तब बालक को समायोजित होना प्रारम्भ हो जाएगा। इसके विपरीत जब–जब बालक का समायोजन नकारात्मक दिशा में जाएगा तब–तब बालक के व्यक्तित्व में भी नकारात्मक कारक विकसित कर देगा। जो विद्यालय जीवन से उसकी रूचि को प्रभावित करेगा, इससे बालक की शिक्षण के प्रति एकाग्रता प्रभावित होगी।

लेकिन विद्यालयों में बालक का समायोजन विद्यालयी व्यवस्था एवं शिक्षण पर आधारित होता है। जब बालक अध्यापक द्वारा दिए गए ज्ञान को पूर्ण रूप से समझ नहीं पाता है, तो वह अपने आपको विद्यालय में कुसमायोजित महसूस करता है। कुछ बालक व्यक्तिगत एवं पारिवारिक समस्याओं के कारण विद्यालय में शिक्षण को पूर्ण रूप से ग्रहण नहीं कर पाते, जिस कारण ऐसे विद्यार्थी अतिरिक्त शिक्षण प्राप्त करने के लिए कोचिंग में जाते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता यह देखने का प्रयास करेगा कि कोचिंग का छात्रों के समायोजन पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

प्रस्तुत अध्ययन में **श्रीमती रागिनी दुबे** की समायोजन मापनी का विद्यार्थियों के समायोजन का परीक्षण लिया गया है जिसके अन्तर्गत विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन, पारिवारिक समायोजन एवं व्यक्तिगत समायोजन का अध्ययन किया गया।

शोध न्यादर्शः

शोधकर्ता द्वारा शोध निष्कर्ष हेतु निम्नानुसार न्यादर्श का चयन किया गयाः

- प्रस्तावित शोध अध्ययन में जयपुर सम्भाग के दो जिलों को लिया गया, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित दो जिलों को सम्मिलित किया गयाः

  1. जयपुर 2. अलवर ।

- प्रस्तुत शोध अध्ययन में 800 का न्यादर्श लिया गया।
- जयपुर सम्भाग के दो जिलों के माध्यमिक विद्यालयों से 400–400 विद्यार्थियों को लिया गया।
- विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया।

शोध अध्ययन की विधिः

शोधकार्य हेतु शोधार्थी ने **'सर्वेक्षण विधि'** का प्रयोग किया।

प्रस्तुत संकलन में प्रयुक्त सांख्यिकीः

- मध्यमान
- मानक विचलन
- टी–परीक्षण सूत्र

निष्कर्ष

परिकल्पना क्रमांक–1 के अनुसार ''माध्यमिक स्तर की सार्वजनिक परीक्षाओं में कोचिंग का विद्यार्थियों के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।''

अध्ययन के अनुसार शोधार्थी द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विभिन्न समायोजन पर शोध करने से ज्ञात हुआ कि कोचिंग का विद्यार्थियों के स्व–समायोजन पर प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि निजी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले और न जाने वाले विद्यार्थियों के समायोजन पर कोचिंग का प्रभाव नहीं पड़ता है।

अध्ययन करने पर निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले और न जाने वाले विद्यार्थियों के समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

माध्यमिक स्तर की सार्वजनिक परीक्षाओं में निजी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले एवं सरकारी विद्यालयों के कोचिंग न जाने वाले विद्यार्थियों के स्व–समायोजन, समवय समूह समायोजन व विद्यालयीन समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, परन्तु निजी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के पूर्ण समायोजन पर कोचिंग का प्रभाव पड़ता है। निजी विद्यालयों के कोचिंग न जाने वाले एवं सरकारी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के स्व–समायोजन तथा समवय समूह समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। जबकि सरकारी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन व पूर्ण समायोजन पर कोचिंग का प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना क्रमांक– 2 के अनुसार " माध्यमिक स्तर की सार्वजनिक परीक्षाओं में निजी एवं सरकारी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।"

अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि निजी एवं सरकारी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के स्व–समायोजन, समवय समूह समायोजन तथा पूर्ण समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। परन्तु निजी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों का विद्यालयीन समायोजन अधिक होता है।

परिकल्पना क्रमांक– 3 के अनुसार "माध्यमिक स्तर की सार्वजनिक परीक्षाओं में अलवर जिले के कोचिंग जाने वाले एवं न जाने वाले विद्यार्थियों के समायोजन पर कोचिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।"

शोधार्थी के अध्ययन में अलवर जिले के कोचिंग जाने वाले एवं न जाने वाले विद्यार्थियों के समायोजन पर कोचिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अध्ययन से ज्ञात होता है कि अलवर जिले के निजी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले एवं नहीं जाने वाले विद्यार्थियों के समायोजन पर कोचिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

अलवर जिले के सरकारी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले एवं न जाने वाले विद्यार्थियों के स्व–समायोजन, समवय समूह समायोजन, पूर्ण समायोजन पर कोचिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता, जब कि अलवर जिले के सरकारी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के विद्यालयीन समायोजन पर कोचिंग का प्रभाव पड़ता है। अलवर जिले के निजी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले एवं सरकारी विद्यालयों के कोचिंग न जाने वाले विद्यार्थियों के समायोजन पर कोचिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि अलवर जिले के निजी विद्यालयों के कोचिंग न जाने वाले एवं सरकारी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के स्व–समायोजन, समवय समूह समायोजन तथा पूर्ण समायोजन पर कोचिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जब कि अलवर जिले के सरकारी विद्यालय के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के विद्यालयीन समायोजन पर कोचिंग का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना क्रमांक–4 के अनुसार "माध्यमिक स्तर की सार्वजनिक परीक्षाओं में अलवर जिले के निजी एवं सरकारी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के समायोजन पर कोचिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।"

प्रस्तुत शोध के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अलवर जिले के निजी एवं सरकारी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के स्व–समायोजन, समवय समूह समायोजन तथा पूर्ण समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है, परन्तु अलवर जिले के सरकारी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के विद्यालयीन समायोजन पर कोचिंग का प्रभाव पड़ता है अर्थात् सरकारी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों का विद्यालयी समायोजन अधिक होता है।

परिकल्पना क्रमांक–5 के अनुसार "माध्यमिक स्तर की सार्वजनिक परीक्षाओं में जयपुर जिले के कोचिंग जाने वाले एवं न जाने वाले विद्यार्थियों के समायोजन पर कोचिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।"

प्रस्तुत शोध के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जयपुर जिले के कोचिंग जाने वाले एवं न जाने वाले विद्यार्थियों के स्व–समायोजन, समवय समूह समायोजन तथा पूर्ण समायोजन पर कोचिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। परन्तु जयपुर जिले के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के विद्यालयीन समायोजन पर कोचिंग का प्रभाव पड़ता है। अर्थात् कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों का विद्यालयीन समायोजन बेहतर होता है।

जयपुर जिले के निजी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के स्व–समायोजन पर कोचिंग का प्रभाव पड़ता है। अर्थात् इन विद्यार्थियों का स्व–समायोजन बहुत अच्छा होता है। जब कि जयपुर जिले के निजी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले एवं नहीं जाने वाले विद्यार्थियों के समवय समूह समायोजन, विद्यालयीन समायोजन तथा पूर्ण समायोजन पर कोचिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। माध्यमिक स्तर की सार्वजनिक परीक्षाओं में जयपुर जिले के सरकारी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले एवं नहीं जाने वाले विद्यार्थियों के समायोजन पर कोचिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

जयपुर जिले के निजी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले एवं सरकारी विद्यालयों के कोचिंग न जाने वाले विद्यार्थियों के स्व–समायोजन, समवय समूह तथा पूर्ण समायोजन पर कोचिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, परन्तु जयपुर जिले के सरकारी विद्यालयों के कोचिंग न जाने वाले विद्यार्थियों का विद्यालयीन समायोजन अधिक पाया जाता

है। जयपुर जिले के निजी विद्यालयों के कोचिंग न जाने वाले एवं सरकारी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के स्व–समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। परन्तु जयपुर जिले के सरकारी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के समवय समूह समायोजन, विद्यालयीन समायोजन व पूर्ण समायोजन पर कोचिंग का प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना क्रमांक–6 के अनुसार ''माध्यमिक स्तर की सार्वजनिक परीक्षाओं में जयपुर जिले के निजी एवं सरकारी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के समायोजन पर कोचिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।''

प्रस्तुत शोध के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जयपुर जिले के निजी एवं सरकारी विद्यालयों के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के स्व–समायोजन, समवय समूह समायोजन तथा पूर्ण समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। परन्तु सार विद्यालयीन समायोजन पर कोचिंग का प्रभाव पड़ता है अर्थात् जयपुर के निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययन के साथ कोचिंग कक्षाओं में अध्ययन से विद्यार्थियों का विद्यालयीन समायोजन बहुत अच्छा होता है।

परिकल्पना क्रमांक–7 के अनुसार ''माध्यमिक स्तर की सार्वजनिक परीक्षाओं में अलवर एवं जयपुर जिले के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के समायोजन पर कोचिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।''

अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि अलवर व जयपुर जिले के कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों के समायोजन पर कोचिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शैक्षिक निहितार्थ

किसी भी शोधकार्य की सार्थकता तभी सिद्ध होती है जब उसके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष समाजोपयोगी हो। प्रस्तुत शोध राजस्थान राज्य के जयपुर संभाग के अन्तर्गत स्थापित दो जिलों (अलवर व जयपुर) के माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन पर पड़ने वाले **'कोचिंग'** के प्रभाव का अध्ययन है। इस अध्ययन के फलस्वरूप **'कोचिंग'** का विद्यार्थियों समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है। यह देखने का प्रयास किया गया है कि **'कोचिंग'** विद्यार्थियों को एक सही दिशा प्रदान करती है अथवा **'कोचिंग'** विद्यार्थी अपने सहपाठियों के साथ प्रतिस्पर्द्धा की भावना व सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण करते हैं। शोध अध्ययन से प्राप्त परिणाम भावी शिक्षा नीति के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं और शिक्षा जगत् की विभिन्न समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। क्योंकि प्रस्तुत शोध अध्ययन से:

- प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर की सरकारी व गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों का मूल्यांकन हुआ है जिससे इन संस्थाओं के प्रबन्धकों को आत्म–चिन्तन की नवीन दिशा मिल सकती है।
- प्रस्तुत शोध से राजस्थान राज्य के जयपुर संभाग के अन्तर्गत दो जिलों (अलवर एवं जयपुर) में स्थापित माध्यमिक स्तर के सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों का भी मूल्यांकन हुआ है, जिनसे इन विद्यालयों के प्रशासकों व प्रबन्धकों को आत्म–मूल्यांकन के अवसर मिलेंगे।
- शिक्षकों के अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सुधार हेतु भी नवीन दिशा विकसित हो सकती है।
- विद्यालयों के पाठ्यक्रमों के निर्माण में भी शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के सन्दर्भ में विषय–वस्तु से सम्बन्धित नवीन संकेत मिल सकते हैं।
- माध्यमिक स्तर की कक्षाओं के लिए यह शोधकार्य आत्म–विश्लेषण करने एवं अपनी विद्यालयी योजना में नवीन तत्वों के समावेश हेतु प्रेरणा का कार्य कर सकता है।
- प्रस्तुत शोधकार्य शिक्षकों को अपना स्व–मूल्यांकन करने हेतु प्रेरित कर रहा है।
- यह शोध विद्यार्थियों को भी आत्म–विश्लेषण का अवसर प्रदान करता हैं
- अलवर एवं जयपुर जिले के शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों के लिए यह शोधकार्य आत्म–विश्लेषण करने एवं अपनी विद्यालयी योजना में नवीन तत्वों के समावेश हेतु प्रेरणा का कार्य कर सकता है।
- यह कार्य शोध के नवीन क्षेत्रों को जन्म देने में समर्थ हैं
- यह शोध इस बात पर भी बल प्रदान करता है कि **'कोचिंग'** से विद्यार्थियों को अपनी उपलब्धि की पूर्ति हेतु उचित मार्गदर्शन प्राप्त होता है। अतः **'कोचिंग'** की गुणवत्ता में वृद्धि के प्रयास किए जाने चाहिए।
- **'कोचिंग'** प्राप्त कर विद्यार्थी अपने समायोजन में सुधार कर सकते हैं जो वर्तमान काल की महत्ती आवश्यकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन अभिभावकों को भी मूल्यांकन के अवसर प्रदान करता है।

शिक्षकों के लिए सुझावः

- विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों व समायोजन की शिक्षकों को पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।
- वर्तमान प्रतियोगिता के युग में विद्यार्थी समायोजन कर सकें, इसलिए शिक्षकों को विद्यार्थियों के मनोविज्ञान को समझने के प्रयास करने चाहिए।
- विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धि व समायोजन स्तर के अनुकूल उचित दिशा प्राप्त हो सके, इसके लिए अभिभावकों से सम्पर्क करना चाहिए।
- शिक्षकों को समय–समय पर विद्यार्थियों से शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन पर चर्चा करके इस प्रकार का वातावरण निर्मित करने का प्रयास करना चाहिए जिससे छात्र वर्तमान स्थिति से समायोजित हो सकें।
- विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धि एवं समायोजन के अनुसार उचित दिशा–निर्देश देने के लिए हरसंभव प्रयास करने चाहिए।
- विद्यार्थियों के समायोजन को सकारात्मक दिशा देने के लिए शिक्षकों द्वारा यथासंभव सहायता दी जानी चाहिए।
- कठिन विषयों को समझने में विद्यालयी समय के अतिरिक्त भी विद्यार्थियों की सहायता शिक्षकों को करनी चाहिए।
- केवल पाठ्यक्रम पूर्ण करना ही नहीं वरन् विद्यार्थियों की शैक्षिक कठिनाइयों का निवारण करना भी शिक्षकों का उद्देश्य होना चाहिए।
- शिक्षकों को विद्यार्थियों के समायोजन को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।
- शिक्षकों को निदानात्मक परीक्षण द्वारा विद्यार्थियों की कठिनाइयों का पता लगाकर उपचार करना चाहिए।
- शिक्षकों को नवाचार द्वारा शिक्षण कार्य करना चाहिए।
- शिक्षकों को **'कोचिंग'** से सम्बन्धित शोधों के परिणामों से विद्यार्थियों को अवगत कराना चाहिए।
- शिक्षकों को विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतियोगिता को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।
- शिक्षकों को कक्षा–कक्ष साप्ताहिक/मासिक परीक्षाओं का आयोजन कर विद्यार्थियों में परीक्षा के भय एवं तनाव को कम करने का प्रयास करना चाहिए।
- शिक्षकों को कक्षा–कक्ष शिक्षण एवं गृहकार्य में अभ्यास को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।
- शिक्षकों को विद्यार्थियों को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार के आयोजन करने चाहिए।
- शिक्षकों को पाठ्यक्रम की योजना बनाकर पढ़ाना चाहिए।
- शिक्षकों को विद्यार्थियों की जिज्ञासा को शांत करने का प्रयास करना चाहिए, उन्हें हतोत्साहित नहीं करना चाहिए।
- विद्यार्थियों को कक्षा–कक्ष शिक्षण में स्वतन्त्रता का अनुभव होना चाहिए।
- शिक्षकों को शिक्षण के लिए उचित व्यूह रचनाओं को बनाना चाहिए।
- शिक्षकों को विषय से सम्बन्धित नवीन जानकारी के प्रति सजग रहना चाहिए।
- शिक्षकों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित सामग्री पर ही निर्भर न रहकर शोधकार्य के प्रति भी जागरूक रहना चाहिए।
- अध्यापकों को विभागीय अथवा विषय सम्बन्धी गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लेना चाहिए।

कोचिंग कक्षाओं के लिए सुझावः

- **'कोचिंग'** कक्षाओं में अध्ययन करने वाले एवं **'कोचिंग'** कक्षाओं में अध्ययन नहीं करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन में अन्तर पाया गया । अतः **'कोचिंग'** कक्षा में अध्ययन कराने हेतु विशेष शिक्षण–कौशलों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- **'कोचिंग'** कक्षाओं को अपनी उपलब्धि को सच्चाई के साथ प्रसारित करना चाहिए।
- **'कोचिंग'** कक्षाओं में नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग करना चाहिए।
- **'कोचिंग'** कक्षाओं में अध्ययन हेतु प्रशिक्षित विषय विशेषज्ञों की सेवाएं लेनी चाहिए।

अभिभावकों के लिए सुझावः

- वर्तमान प्रतियोगिता की दौड़ में सम्मिलित होने के लिए उन्हें किसी भी रूप में बाध्य नहीं करना चाहिए।
- बालकों के मानसिक स्तर तथा क्षमता को ध्यान में रखकर ही विषयों को दिलाना चाहिए।
- बालकों के मित्रों की बढ़ती शैक्षिक उपलब्धि को देखकर उन पर किसी भी प्रकार की बाध्यता नहीं करनी चाहिए।

- बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के अनुकूल ही उन्हें सही दिशा उपलब्ध कराने का प्रयास करना चाहिए।
- अभिभावकों द्वारा घर का वातावरण इस प्रकार का निर्मित करने का प्रयास करना चाहिए कि उनके शिक्षण में बाधा उत्पन्न न हो।
- बालकों की प्रगति की सूचनाएं विद्यालयों तथा **'कोचिंग'** केन्द्रों के शिक्षकों से नियमित रूप से प्राप्त करनी चाहिए।
- बालकों की व्यक्तिगत व मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर सहानुभूतिपूर्वक विचार–विमर्श करना चाहिए।
- बालकों की शैक्षिक समस्याओं के निदान हेतु उन्हें प्रशिक्षित शिक्षकों की **'कोचिंग'** कक्षाओं में भेजने के अवसर उपलब्ध कराने चाहिए।
- बालकों की शिक्षा पर किए गए व्यय को उचित निवेश नहीं समझना चाहिए।
- प्रतियोगिता के वर्तमान युग में घर, विद्यालय व समाज में उचित समायोजन कर सकने की क्षमता का विकास हो सके, इस ओर प्रयासरत रहना चाहिए।
- **'कोचिंग'** कक्षाओं में प्रवेश दिलवाने से पूर्व विषय अध्यापक से परामर्श अवश्य लेना चाहिए।

प्रशासकों के लिए सुझाव:

- प्रशासकों को उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वाले छात्रों को विशेष शैक्षिक सुविधाएं दिलाने के प्रयास करने चाहिए।
- प्रशासकों को शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को **'कोचिंग'** कक्षाओं में जाने की बाध्यता पर रोक लगानी चाहिए।
- प्रशासकों द्वारा शिक्षकों की व्यावसायिक क्षमता को बढ़ाने के प्रयास करते रहना चाहिए।
- प्रशासकों को विद्यालयों में पूर्ण शैक्षिक सुविधाएं उपलब्ध कराने के प्रयास कराने चाहिए।
- शिक्षकों की क्रमोन्नति का आधार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों के बढ़ते स्तर को दिया जाना चाहिए।
- प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रवेश परीक्षाओं के साथ–साथ विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को भी व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश का आधार बनाना चाहिए।
- **'कोचिंग'** कक्षाओं में न्यूनतम अनिवार्य भुगतान के नियम बनाए जाने चाहिए।
- **'कोचिंग'** करने तथा संस्थान खोलने के लिए अनिवार्य योग्यताएं निश्चित की जानी चाहिएं।
- **'कोचिंग'**रत शिक्षकों तथा संचालकों को अपनी उपलब्धियों का वार्षिक प्रतिवेदन सरकार के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए।
- **'कोचिंग'** संस्थानों व विद्यालयी शिक्षा को जोड़ने के प्रयास करना चाहिए।
- विद्यार्थियों के लिए माध्यमिक स्तर की शिक्षा समाप्त होने पर उचित दिशा–निर्देश हेतु गाइडेन्स ब्यूरो व मनोवैज्ञानिक परीक्षण के लिए सरकार द्वारा प्रयोगशालाएं प्रारम्भ की जानी चाहिए।
- उच्च शैक्षिक परिणाम प्रदान करने वाले शिक्षकों को सरकार की ओर से विशेष लाभ दिलाए जाने चाहिए।
- **'कोचिंग'** संस्थानों तथा उनमें कार्यरत शिक्षकों की नियमित जांच प्रशासकों द्वारा की जानी चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- कपिल, एच.के. : असामान्य मनोविज्ञान, कचहरी घाट, आगरा।
- जॉन, डी.वी. : डेमोक्रेसी इन एजूकेशन न्यूयार्क, मैकलिन।
- बघेल, डी.एस. : सामाजिक अनुसंधान, साहित्य भवन पब्लिशर्स, आगरा–2000
- बी.डी.भाटिया और आर.एन.सफाया : शिक्षा मनोविज्ञान और निर्देशन।
- बी.कुप्पुस्वामी : एडवांस एजूकेशनल साइकोलॉजी।
- भार्गव, महेश चन्द : मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन, हरप्रकाश
- भारद्वाज, जे.एल. : सांख्यिकीय तकनीक, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2002
- राबर्ट, आर. रस्क : शिक्षा में अनुसंधान, नई दिल्ली, पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि.।
- राय, पारसनाथ : अनुंसधान परिचय, आगरा।
- रविन्द्रनाथ टैगोर : क्रिसिस इन सिविलाइजेशन, कलकत्ता, विश्व भारती।
- रायजादा, बी.एस. : शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1997
- वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी.एन. : मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2001
- शर्मा, जे.डी. : असामान्य मनोविज्ञान, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।

- शर्मा, आर.ए. : शिक्षा अनुसंधान, लायल बुक डिपो, मेरठ।
- शेखर, वी. शर्मा, व्यास एवं पालीवाल : राजस्थान में शिक्षानुसंधान सम्प्राप्तियों एवं सम्भावनाएं, शिक्षा विभाग, बीकानेर, राज0 1987।
- सुखिया, एस.पी., मेहरोत्रा, पी.बी. एवं मेहरोत्रा, आर.एन.: शैक्षिक अनुसंधान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1970
- डॉ0 हरदेव बाहरी : हिन्दी शब्दकोष।
- गुड कार्टर वी. : डिक्शनरी ऑफ एजूकेशन, न्यूयार्क मैकग्राहिल।
- राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका, अजमेर।
- भारतीय शिक्षा बोध पत्रिका, लखनऊ।
- यूनिवर्सिटी न्यूज, दिल्ली।
- माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर कमीशन) अध्याय–2, शिक्षा आयोग (कोठारी कमीशन)।
- नेशनल पॉलिसी ऑन एजूकेशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1986।
- अग्रवाल, जे.सी. : एजूकेशनल रिसर्च इन इंट्रोडक्शन, पब्लिश्ड मानसिंह, आर्य बुक डिपो, न्यू देहली।
- अग्रवाल, आर.एन. : एडजेस्टमेंट प्रॉब्लम्स ऑफ पीपुल्स ऑफ सैकण्डरी स्कूल, पीएच.डी.एजूकेशन, आगरा यूनिवर्सिटी, 1970।
- दास, एस.के. : एजूकेशनल सिस्टम ऑफ द अनसियेन्ट हिन्दूज, 1930।
- इबेल, रॉबर्ट, एल. ईडी. : एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, द मैकमिलन कम्पनी,लंदन, 1969।
- गेट्स एण्ड अदर्स : एजूकेशनल साइकोलॉजी, थर्ड एडिशन, द मैकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क, 1950।
- हरलॉक, एच.बी. : पर्सनैलिटी डवलपमेंट, टाटा मैकग्राहिल पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड, न्यूयार्क, 1974।
- कानावाला, एस. : एडजस्टमेंट प्रॉब्लम्स ऑफ कालेज स्टूडेन्ट, एजूकेशन साइकोलॉजी।
- पटेल, ए. एस. एण्ड जोशी, आर. जे., 1976: ए स्टेडी ऑफ एडजेस्टमेंट प्रोसेस ऑफ हाई एण्ड लो अचीवर्स, जर्नल्स ऑफ साइकोलॉजीकल रिसर्च)।
- बुच, एम.बी.: फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, (1983–1988) वोल्यूम–11, एन. सी. ई. आर.टी., नई दिल्ली।